(४) मोहे भावे न भैया...

मोहे भाव न भैया थारो देश, रहूँगा मैं तो निज-घर में ॥ टेक ॥

मोहे न भावे यह महल अटारी, झूँठी लागे मोहे दुनिया सारी;
मोहे भावे नगन सुभेष, रहूँगा मैं तो निज-घर में ॥ 1 ॥

हमें यहाँ अच्छा नहीं लगता, यहाँ हमारा कोई न दिखता;
मोहे लागे यहाँ परदेश, रहूँगा मैं तो निज-घर में ॥ 2 ॥

श्रद्धा ज्ञान चारित्र निवासा, अनन्त गुण परिवार हमारा;
मैं तो जाऊँगा सुख के धाम, रहूँगा मैं तो निज-घर में ॥ 3 ॥

कब पाऊँगा निज में थिरता, मैं तो उसके लिए तरसता;
मैं तो धारूँ दिगम्बर भेष, रहूँगा मैं तो निज-घर में ॥ 4 ॥